हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल

HEMVATI NANDAN BAHUGUNA GARHWAL UNIVERSITY, SRINAGAR GARHWAL

विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए आम-जनमानस द्वारा किये गये संघर्ष से सम्बन्धित घटनाक्रमों तथा स्मृतियों

एवं

स्थापना से अब तक विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अर्जित उपलब्धियों के संकलन का प्रस्तुतिकरण

PRESENTATION OF EVENTS AND MEMORIES RELATED TO THE STRUGGLE MADE BY THE PUBLIC FOR THE ESTABLISHMENT OF THE UNIVERSITY

AND

THE ACHIEVEMENTS MADE BY THE UNIVERSITY IN VARIOUS FIELDS SINCE ITS INCEPTION

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय

Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University

श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड)-246174

Srinagar Garhwal (Uttarakhand) -246174

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University)

पत्रांकः हे0न0ब0ग0वि0वि0 / डी0सी0 / 2022 / 33(डी0पी0इ0) दिनांकः 29.08.2022

आग्रह

माननीय महोदय, आप भली–भाँति अवगत हैं कि वर्ष 1971 से वर्ष 1973 के कालखण्ड़ में इस क्षेत्र के आम–जनमानस के सांगठनिक जनांदोलन के फलस्वरूप अधिसूचना दिनांक 23 नवम्बर सन् 1973 से स्थापित हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष शीध्र प्रारम्भ हो रहा है। स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए आम–जनमानस द्वारा किये गये संघर्ष से सम्बन्धित घटनाक्रमों तथा स्मृतियों का एकत्रीकरण एवं स्थापना से अब तक विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अर्जित उपलब्धियों के संकलन एवं विभिन्न माध्यमों से इनके प्रस्तुतिकरण का विनिश्चिय किया गया है।

इस हेतु समाज के सभी विद्वतजनों, विश्वविद्यालय की स्थापना से सम्बन्धित आन्दोलनकारियों, विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों, पूर्व छात्रों और जन–सामान्य से यह विनम्र आग्रह है कि विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए हुये आन्दोलन एवं विश्वविद्यालय की स्थापना से वर्तमान तक की उल्लेखनीय उपलब्धियों के अभिलेख (समाचार पत्रों की प्रतिलिपि, छायाचित्र, ऑडियो–वीडियो आदि) विश्वविद्यालय द्वारा गठित की गई स्थापना दिवस / स्वर्ण जंयती वर्ष अभिलेखीकरण समिति के सदस्यों को शीघ्र–अतिशीघ्र उपलब्ध कराने की कृपा करें।

अतः आपसे विश्वविद्यालय का यह व्यक्तिगत अनुरोध है कि आप दिनांक **30.09.2022** तक विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए हुये आन्दोलन, स्थापना के समय विश्वविद्यालय के नवीन कार्यालयी भवनों के छायाचित्र तथा विश्वविद्यालय की स्थापना से वर्तमान तक प्रमुख उपलब्धियों से सम्बन्धित जो भी प्रमाणिक सूचना अथवा अभिलेख आप महानुभाव के पास उपलब्ध हों उसे विश्वविद्यालय द्वारा नामित समिति के निम्नलिखित सदस्यों को उपलब्ध कराने की कृपा करेंगे। अवगत हों कि जिस व्यक्ति द्वारा जो सूचना उपलब्ध करायी जायेगी उस सूचना के श्रोत के रूप में सम्बन्धित व्यक्ति के नाम का उल्लेख आभार के रूप में प्रस्तुतिकरण सम्बन्धी अभिलेख में यथास्थान किया जायेगा। निर्धारित तिथि के पश्चात प्राप्त होने वाली सूचनायें अभिलेखीय प्रस्तुतिकरण में सम्मिलित नहीं हो पायेंगी।

नामित समिति के सदस्य जिन्हें विभिन्न स्मृतियों के अभिलेख–समाचार पत्रों की प्रतिलिपि, छायाचित्र, ऑडियो–वीडियो इत्यादि सम्बन्धी सूचना व्हाट्सेप अथवा ई–मेल के माध्यम से प्रेषित की जा सकती है का विवरण निम्नवत् है–

क्र0सं0	समिति के नामित सदस्य	व्हाट्सेप नम्बर	ई–मेल
1	डॉ0 सुरेन्द्र सिंह बिष्ट	9412032093	surendra100singh@gmail.com
2	श्री जयजीत बर्थवाल	9927929241	jaijeet1barthwal@gmail.com
3	डॉ0 सर्वेश उनियाल	9412079253	serveshuniyal@gmail.com
4	इं0 महेश डोभाल	8958458550	mpdobhal1@gmail.com
5	डॉ0 नागेन्द्र रावत	9411737647	nagendra.rawat957@gmail.com
6	डॉ0 कपिल पंवार	7618308145	kapilpanwar96@gmail.com

संयोजक,
अभिलेखीकरण समिति

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ, आवश्यक कार्यवाही एवं इस अनुरोध के साथ प्रेषित कि इस विषयक उपलब्ध महत्वपूर्ण अभिलेख समिति को प्रेषित करने की कृपा करेंगे–

1. समस्त स्कूलों के संकायाध्यक्ष।
2. समस्त विभागों के विभागाध्यक्ष।
3. परिसर निदेशक पौड़ी/टिहरी/चौरास परिसर।
4. अधिष्ठाता छात्र कल्याण/नियन्ता/मुख्य छात्रावास अधीक्षक/पुस्तकालयाध्यक्ष/अधिशासी अभियन्ता।
5. विभिन्न प्रकोष्ठों के प्रभारी/सचिव, एलूमिनाई एसोसियेशन, हे0न0ब0ग0वि0वि0।
6. निदेशक, आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ/निदेशक, संकाय विकास/निदेशक प्लेसमेन्ट सेल।
7. वित्त अधिकारी, हे0न0ब0ग0वि0वि0।
8. सम्पादक अमर उजाला/दैनिक जागरण/शाह टाईम्स/हिन्दुस्तान/राष्ट्रीय सहारा को इस निवेदन के साथ कि उक्त आग्रह को निशुल्क अपने पत्र में प्रकाशित करने का कष्ट करें।
9. प्रभारी सिस्टम मैनेजर को इस आशय से कि उक्त को विश्वविद्यालय वेबसाइट में अपलोड करें।
10. निजी सचिव कुलसचिव, कुलसचिव महोदय के सादर सूचनार्थ।
11. निजी सचिव प्रतिकुलपति, माननीय प्रतिकुलपति महोदय के सादर सूचनार्थ।
12. निजी सचिव कुलपति, माननीया कुलपति महोदया के सादर अवलोकनार्थ।

संयोजक,
अभिलेखीकरण समिति

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय

Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University

श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड)-246174

Srinagar Garhwal (Uttarakhand) -246174

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University)

Ref.: HNBGU/DC/2022/33(DPE) Dated: 29.08.2022

REQUEST

Respected all,

Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University owes its rare existence to a powerful popular mass movement launched during the early seventies in the last century. Although some renowned individuals spearheaded the social movement leading to HNBGU's historical founding, the movement itself was mobilized by the common people of Garhwal's commonplaces. For instance, the women of this region mobilized the movement to strive for better higher education opportunities and redress the neglected Part of Uttarakhand. Their aspirations also embodied a deep quest to empower their future generations through a geographically integrated region replete with economic and socio-cultural resources.

The epicentre of this movement was Srinagar, a culturally and politically awakened town of Garhwal. The pressure generated by social movement was so tremendous that the Uttar Pradesh Government was forced to declare the founding of the Garhwal University and eventually the dream of the Garhwali peoples turned into reality with the establishment of Garhwal University at Srinagar Garhwal, on November 23, 1973.

Now the university is on the cusp of consummating its long and arduous journey of 50 years through a Golden Jubilee celebration since its epochal founding. During this momentous and historic Golden Jubilee year, the University is planning to film a documentary and organize an exhibition foregrounding the university's transformation into a central university in the last five decades of its hard-won existence. These creative projects aim to honour all the illustrious people who have contributed immensely to realize this dream especially for the region's youth who were once deprived of higher education opportunities because of Garhwal's remote location.

In order to fulfil the aforementioned objectives, the Members of the Golden Jubilee Year Documentation committee very humbly requesting all the former students, members of the university fraternity, the research scholars, the scholars of the society, the strugglers of the movement for university establishment and; all the stakeholders from the public, to kindly share the documents/records or newspaper clippings , photographs, and/or any audio-video clippings in their personal archives related to the movement and the university's establishment. For example, old photographs capturing the memories of the old campus days ranging from academic, sports, cultural or social activities can be shared. The alumni are requested to furnish their current photographs with a brief description about their current workplace and year of graduation from their alma mater.

Please note that only authentic records and documents will be incorporated in the exhibition and documentary. It is worthwhile to mention here that the university shall credit the veritable sources contributing to the university's golden jubilee commemoration archive.
The long list of illustrious alumni of the University in diverse field and public life in the country and abroad makes us so proud.

Since these projects attempt to showcase the long journey which we all have made together during the last 50 years, therefore its success depends on your vital support and cooperation.
In view of this, we would like to request you, to kindly send the desired documents and material through *email/WhatsApp/ in person or by post throuogh* **Convener Doucmentation Committee, Department of History and Archaeology, Birla Campus, HNB Garhwal University, Srinagar Garhwal- 246174** before **September 30, 2022** positively so that the exhibits of different categories can be catalogued, sorted out, and arranged meaningfully and elegantly for this historical celebrations.
Particulars of the Committee to whom the details may be sent are as under:

S.No.	Nominated members of the Committee	WhatsApp No.	E-mail
1.	Dr. Surendra Singh Bisht	9412032093	surendra100singh@gmail.com
2.	Shri Jayjeet Bartwal	9927929241	Jaijeet1barthwal@gmail.com
3.	Dr. Sarvesh Uniyal	9412079253	serveshuniyal@gmail.com
4.	Er. Mahesh Dobhal	8958458550	mpdobhal1@gmail.com
5.	Dr. Nagendra Rawat	9411737647	nagendra.rawat957@gmail.com
6.	Dr. Kapil Panwar	7618308145	kapilpanwar96@gmail.com

Thanking You,

Convener,
Documentation Committee

Copy for information and necessary action to:

1. All Dean(s) of Schools.
2. All Head(s) of Departments.
3. Campus Director, Pauri/Tehri/Chauras.
4. DSW/Proctor/Chief Hostel Warden/Librarian/Executive Engineer.
5. In-charge of Cells/Secretary Alumni Association of HNBGU.
6. Director IQAC/Director, FDC/Director Placement Cell.
7. Finance Officer, HNBGU.
8. Editor/Reporter, Amar Ujala/Dainik Jagran/Shah Times/Hindustan/Rastriya Sahara with a request to publish the appeal of the University in your concerned news paper, free of cost.
9. In-charge, System Manager for uploading to University website.
10. P.S. to Registrar for information of Registrar.
11. P.S. to P.V.C. for information of Hon'ble Pro Vice Chancellor.
12. P.S. to V.C. for kind perusal of Hon'ble Vice Chancellor.

Convener,
Documentation Committee

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University

संकल्पना पत्र (Concept Note)

संघर्ष के सामर्थ्य का प्रतिफलः हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय।

प्रस्तावनाः

प्राकृतिक सौन्दर्य से सम्पन्न परन्तु शैक्षिक रूप से पिछड़े इस पर्वतीय क्षेत्र के समग्र शैक्षिक उन्नयन के लिए, उच्च शिक्षा के अवसर एवं संसाधन सुलभ कराने के उद्देश्य से इस क्षेत्र के आम जनमानस के व्यापक, अनुशासित एवं सांगठनिक जन आंदोलन के फलस्वरूप वर्ष 1973 में गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

इतिहास अनेकों ऐसे दृष्टान्तों से भरा है जहाँ व्यक्ति को अपनी सुख–सुविधाओं के साधन प्राप्त करने हेतु जनांदोलन का सहारा लेना पड़ा परन्तु, वर्ष 1971 से 1973 के कालखण्ड़ में इस पर्वतीय क्षेत्र का आम–जनमानस उस अनूठे उद्देश्य के लिए संघर्षरत था जिससे आने वाले समय में उनकी भावी पीढ़ियों एवं क्षेत्र की युवा शक्ति को उच्च शिक्षा के संसाधनों की सुगम्यता हो सके और इसलिये सम्पूर्ण गढ़वाल मण्ड़ल इस क्षेत्र में विश्वविद्यालय की मांग को लेकर आन्दोलित हुआ।

''यह आन्दोलन कई पहलुओं को लेकर सर्वथा भिन्न प्रकार का आन्दोलन था क्योंकि तब इस पर्वतीय क्षेत्र में वर्तमान की तरह आवागमन के लिए जगह–जगह सड़कें नहीं थी और जो इक्का–दुक्का सड़कें थी भी उन पर निरन्तर आने जाने के लिए पर्याप्त बसें उपलब्ध नहीं थी। संचार के साधन नहीं थे, यहां तक कि समाचार पत्र भी तत्कालीन समय में दैनिक रूप से प्रकाशित न होकर साप्ताहिक रूप से प्रकाशित होता था। किसी व्यक्ति या समूह तक संदेश पहुंचाने के लिए पैदल संदेशवाहक एवं हस्तलिखित पत्रों का ही सहारा लेना पड़ता था। फिर भी इन महत्वपूर्ण संसाधनों के बिना भी तत्कालीन समय में इस क्षेत्र के जागरूक जनमानस द्वारा अपनी भावी पीढ़ियों के शिक्षा से सम्पन्न उज्ज्वल भविष्य एवं उन्हें उच्च स्तर पर शिक्षित करने के लिए जिस प्रकार एक जुट होकर सांगठनिक आन्दोलन कर विश्वविद्यालय की स्थापना को साकार किया गया, वह अन्यन्त ही प्रशंसनीय, गौरवपूर्ण एवं अविस्मरणीय है।

यह आन्दोलन पहाड़ी महिला शक्ति की सक्रिय भागीदारी के लिए भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होंने हर स्तर पर आन्दोलन को गतिमान रखकर विश्वविद्यालय की स्थापना के संघर्ष को जीवंत रखा। मातृ शक्ति यह भली–भाँति जानती थी कि जागृति एवं समृद्धि के लिए उत्तम शिक्षा प्रथम सोपान है जिसका गढ़वाल मण्ड़ल में सर्वथा अभाव था इसीलिए गढ़वाल मण्ड़ल के अन्तर्गत एक ऐसे विश्वविद्यालय की नितान्त आवश्यकता थी जिसमें सर्वांगपूर्ण शिक्षा की पूर्ण सुविधा हो और इसीलिए आन्दोलन में भागीदारी करते हुए उन्होंने नारा दिया कि **''हम गढ़वाली नारी हैं फूल नहीं चिन्गारी हैं''**।

आज जबकि विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के 50वें वर्ष में प्रविष्ट हो रहा है इसकी स्थापना के लिए समाज के बीच संघर्ष करने वाले एवं शासकीय तन्त्र में इसकी स्थापना के लिए सहायता करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के उल्लेखनीय एवं अविस्मरणीय योगदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना इस विश्वविद्यालय परिवार से जुड़े प्रत्येक सदस्य का दायित्व है।

जन–मानस की आंकाक्षाओं के अनुरूप ही पर्वतीय अंचल की कठिन परिस्थितियों, संसाधनों की कमी तथा शिक्षा के सीमित अवसरों के कारण होने वाली कठिनाईयों को समझते हुये विश्वविद्यालय ने दूरस्थ क्षेत्रों में निवासित व्यक्ति के अपने तक आने की प्रतीक्षा किये बिना ही उस तक अपनी पहुँच बनाने को प्राथमिकता दी है और यही कारण है कि विश्वविद्यालय ने परम्परागत पाठ्यक्रमों के साथ–साथ पर्यावरण संवर्धन, आरोग्य हितार्थ, पुरातन ज्ञान एवं क्षेत्रीय आवश्यकताओं को केन्द्र में रखकर तैयार किये गये अनेकों पाठ्यक्रमों के माध्यम से क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। क्षेत्रीय आवश्यकताओं से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों के

संचालन का ही परिणाम है कि स्थापना के बाद समुचित संसाधनों के अभाव में भी विश्वविद्यालय निरन्तर उन्नतिशील रहते हुये अब तक के कालखण्ड़ में अनेकों महत्वपूर्ण उपलब्धियां अर्जित करने में सफल हो पाया है।

विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए एवं स्थापना के बाद से अब तक के कालखण्ड़ में इसकी उपलब्धियों के प्रति समर्पित भाव से संलग्न रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के योगदान को वर्तमान समाज तक सुलभ कराने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय द्वारा इससे सम्बन्धित घटनाओं, विवरणों एवं सूचनाओं के संकलन के विनिश्चय के साथ इसके प्रस्तुतिकरण को विभिन्न माध्यमों से समाज तक सुलभ करने का लक्ष्य रखा गया है।

2. उद्देश्य एवं अवसरः

दिनांक 01 दिसम्बर, 2022 से विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती वर्ष यात्रा प्रारम्भ होने के अवसर पर विश्वविद्यालय की स्थापना के गौरवपूर्ण आन्दोलन की गाथा एवं अब तक की विशिष्ठ उपलब्धियों को प्रमुख रूप से सार्वजनिक किये जाने का लक्ष्य है जिसका प्रमुख उद्देश्य विश्वविद्यालय स्थापना के लिए संघर्षरत रहे सभी महानुभावों एवं विश्वविद्यालय की ख्याति निर्माण के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हुये आज की पीढ़ी तक यह संदेश देना है कि यदि व्यक्ति समाज के लिए निस्वार्थ भाव से उन सुविधाओं को जुटाने के लिए संघर्षरत रहता है जिनसे आने वाली पीढ़ियों का भविष्य जुड़ा है तो उसके लिए संसाधन, आवागमन एवं संचार की सुविधाओं की कमी कभी आड़े नहीं आती।

3. सूचना का श्रोत एवं एकत्रीकरणः

अभिलेखीकरण की दिशा में यह अत्यन्त आवश्यक है कि हर उस तथ्य एवं घटना को सही रूप में जनमानस के सम्मुख रखा जाय जिस रूप में वो घटित हुई थी इसीलिए यह आवश्यक है कि समाज के हर वर्ग से **यह सार्वजनिक आग्रह किया जाय कि इस आन्दोलन के सन्दर्भ में उनके पास जो भी अभिलेख प्रमाणिक रूप से उपलब्ध हों उन्हें विश्वविद्यालय को समयबद्ध उपलब्ध कराया जाय ताकि तत्सम्बन्धी घटना एवं विवरण को इसके अभिलेखीयकरण में तत्सम्बन्धी सूचना/विवरण को उपलब्ध कराने वाले व्यक्ति के नाम का आभार सहित उल्लेख करते हुये सम्मिलित किया जा सके।** इस विषय में प्रकाशित किये जाने वाले आग्रह पत्र का प्रारूप संलग्न है।

II. इसके साथ ही विश्वविद्यालय उन सभी महानुभावों से उनके व्यक्तिगत संस्मरणों के लिए सम्पर्क करने का आकांक्षी है जिन्होंने आन्दोंलन में सक्रिय भागीदारी की है।

III. छायांकन की प्रक्रिया में विश्वविद्यालय उन पुराने भवनों के छायाचित्र प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है जिनमें स्थापना के समय विश्वविद्यालय के अलग–अलग कार्यालय संचालित हुये।

IV. विश्वविद्यालय की स्थापना से अब तक जितने भी कुलपति महानुभावों द्वारा विश्वविद्यालय का संचालन किया गया उनसे सम्बन्धित सामान्य विवरण एवं उनके छायाचित्र व हस्तचित्र कुलपति सचिवालय में स्थापित करने का विनिश्चय किया गया है।

V. विश्वविद्यालय के परिसर एवं कुछ महत्वपूर्ण भवन/छात्रावास जो किसी विशिष्ठ व्यक्ति के नाम पर रखे गये हैं उन परिसरों/भवनों में तत्सम्बन्धी महापुरूष के जीवन का विशिष्ठ विवरण एवं उनका छायाचित्र/हस्तचित्र स्थापित करने का भी विनिश्चय किया गया है।

4. सूचना का प्रस्तुतिकरणः

विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए हुए आन्दोलन से प्रारम्भ करते हुए स्वर्ण जयन्ती वर्ष अर्थात् 50 वर्षों के कालखण्ड़ में विश्वविद्यालय की अब तक की जो भी प्रमुख उपलब्धि रही हैं उन सभी का संकलन करते हुये सभी एकत्रित सूचनाओं को नियोजित रूप से प्रस्तुत किये जाने का विनिश्चय है। प्रस्तुतिकरण से प्रत्येक वर्ग लाभान्वित हो सके इस तथ्य का विशेष ध्यान रखते हुये प्रस्तुतिकरण के निम्नलिखित स्वरूपों का निर्धारण किया गया।

I. एकत्रित सूचनाओं को एक पुस्तक के रूप में सम्पादित कर प्रसारित किया जाय ताकि पुस्तक पढ़ने वाला वर्ग लाभान्वित हो सके। ज्ञातव्य है कि विश्वविद्यालय की एक पूर्व संकाय प्रो0 उमा मैठाणी, हिन्दी विभाग द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना के विषय में **"उत्तराखण्ड़ का पांचवा धाम (विश्वविद्यालय की स्थापना)"** शीर्षक से एक अध्याय अपनी एक पुस्तक में लिखा गया है अतैव यह विनिश्चित किया गया कि इस

अवसर पर एकत्रित सूचनाओं से तैयार की जानी वाली एडिटेड पुस्तिका प्रो0 उमा मैठाणी के नेतृत्व में तैयार की जा सकती है।

II. विश्वविद्यालय स्थापना का आन्दोलन एवं स्थापना के बाद स्वर्ण जयन्ती वर्ष तक के कालखण्ड़ में इस विश्वविद्यालय की प्रमुख उपलब्धियों के सम्पूर्ण वृतांत को एक लघु फिल्म के माध्यम से प्रस्तुत किया जाय ताकि इसे विभिन्न अवसरों पर प्रदर्शित किया जा सके।

III. इस पूरे वृतांत से सम्बन्धित घटनाओं एवं अभिलखों की पोस्टर प्रदर्शनी विश्वविद्यालय के तीनों परिसरों में प्रदर्शित किये जाने एवं तदोपरान्त इन सभी पोस्टर्स को संग्रहालय की गैलरी में स्थापित करने का भी विनिश्चिय किया गया ताकि इतिहास में रूचि रखने वाला वर्ग इस गौरवपूर्ण घटना से परिचित हो सके।

IV. विश्वविद्यालय के किसी प्रमुख स्थल पर एक **"स्थापना स्मृति दीवार"** की रचना की जाय जिस पर विश्वविद्यालय की स्थापना से सम्बन्धित सभी प्रमुख आन्दोलनकारी व्यक्तियों के नाम की पट्टिका अंकित हो। इससे विश्वविद्यालय में भ्रमण कर रहे आगन्तुक शिक्षा के प्रसार के लिए विश्वविद्यालय की स्थापना विषयक जनांदोलन से परिचित हो सकेंगे।

V. इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर भी स्थापना सम्बन्धी एक पेज नियत किया जा सकता है जिसमें स्थापना सम्बन्धी गौरवपूर्ण घटनाओं का समावेश हो।

5. **निष्कर्षः** समिति का अभिमत है कि विश्वविद्यालय की स्थापना सम्बन्धी आन्दोलन के अभिलेखीकरण से एक महत्वपूर्ण जनांन्दोलन के घटनाक्रमों व अभिलेखों का संकलन होने से विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर रहे युवा तथा आम–जनमानस इससे प्रेरणा ले सकेंगे साथ ही विश्वविद्यालय की स्थापना से वर्तमान तक की उल्लेखनीय उपलब्धियों का अभिलेखीकरण विश्वविद्यालय की आगामी योजनाओं के लिए मार्गदर्शक होंगी जिनका प्रस्तुतिकरण स्वर्ण जयन्ती वर्ष के अवसर पर किया जा सकेगा।

उस समय के आन्दोलन में लोगों का यह संकल्प कि **"भरे जेल चाहे चले लाख गोली, चले जूझने को निहत्थों की टोली"** आज भी हर आन्दोलन में अहिंसात्मक रहने की प्रेरणा प्रदान करता है।

डॉ0 (कपिल पंवार) **डॉ0 (नागेन्द्र रावत)** **ई0 (महेश डोभाल)**

डॉ0 (सर्वेश उनियाल) **डॉ0 (सुरेन्द्र सिंह बिष्ट)**